नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

मानवता के लिए शांति आवश्यक – प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा में विश्व शांति स्तूप का वर्धापन दिवस

'विश्व शांति स्तूप की संकल्पना' पुस्तक का लोकार्पण

जापान, अमेरिका, नेपाल, भारत के भिक्षुओं का सहभाग

वर्धा दि. 15 फरवरी 2016: पूरे विश्व में संघर्ष का वातावरण है। ऐसे में हमें मानवता के लिए शांति की आवश्यकता है। तथागत बुद्ध के संदेश से हमें अपने पर अनुशासन और नियंत्रित कर शांति

स्थापित करनी चाहिए। उक्त उदबोधन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किये। वे वर्धा स्थित विश्व शांति स्तूप के 23वें वर्धापन दिवस के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि आज के दौर में हम मानसिक और भौतिक अशांति के समय में जी रहे हैं। सभी

जगह शांति की खोज हो रही है। बुद्ध ने ढाई हजार वर्ष पूर्व मानवता की शांति का जो संदेश दिया

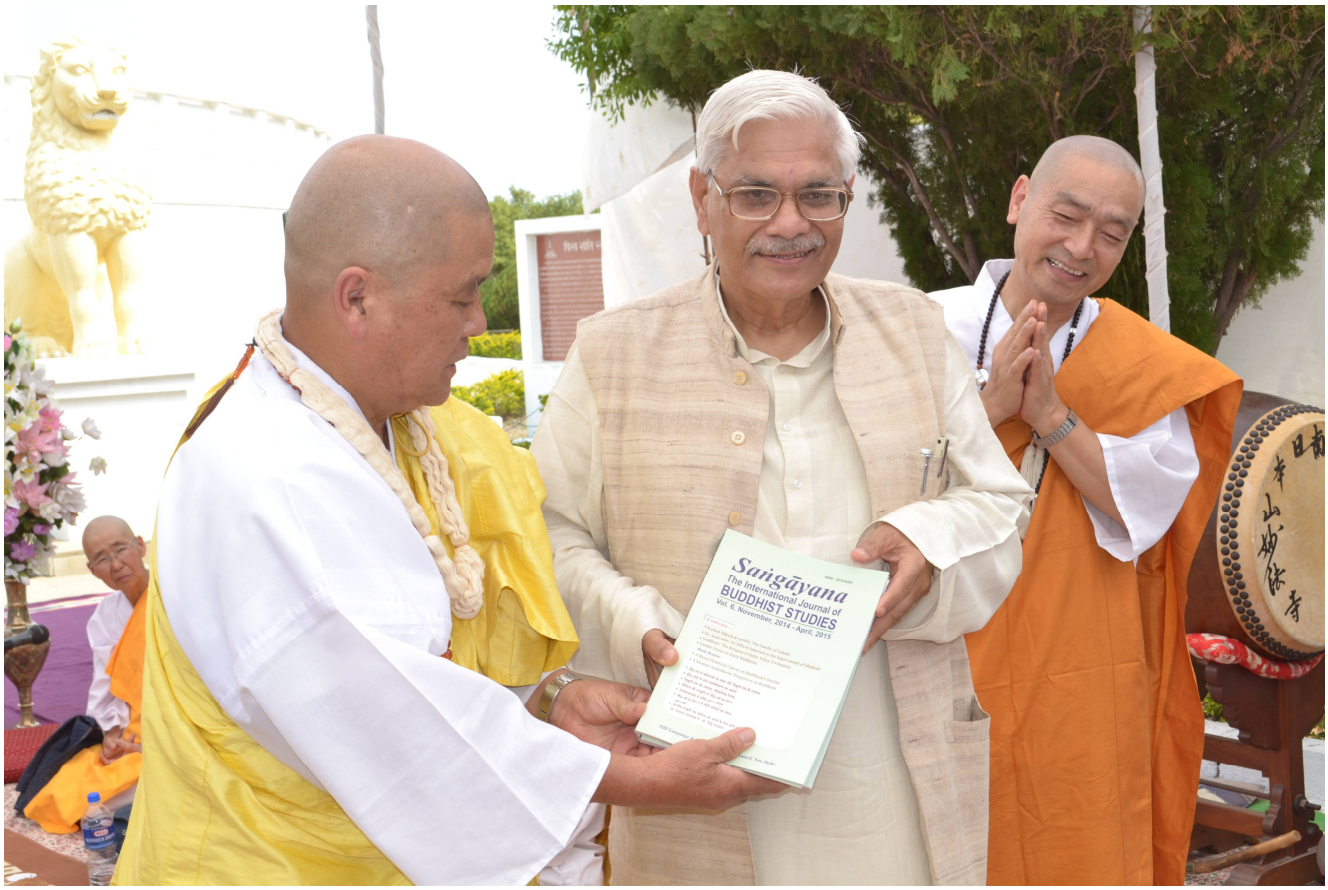

था वह आज भी शांति को प्रस्थापित करने के लिए उपयोगी है। वर्धा नगरी महात्मा गांधी के कार्य के साथ जुड़ी हुई है। विश्व शांति की स्थापना से यह शहर विश्व के नक्शे पर विराजीत हुआ है। यहां

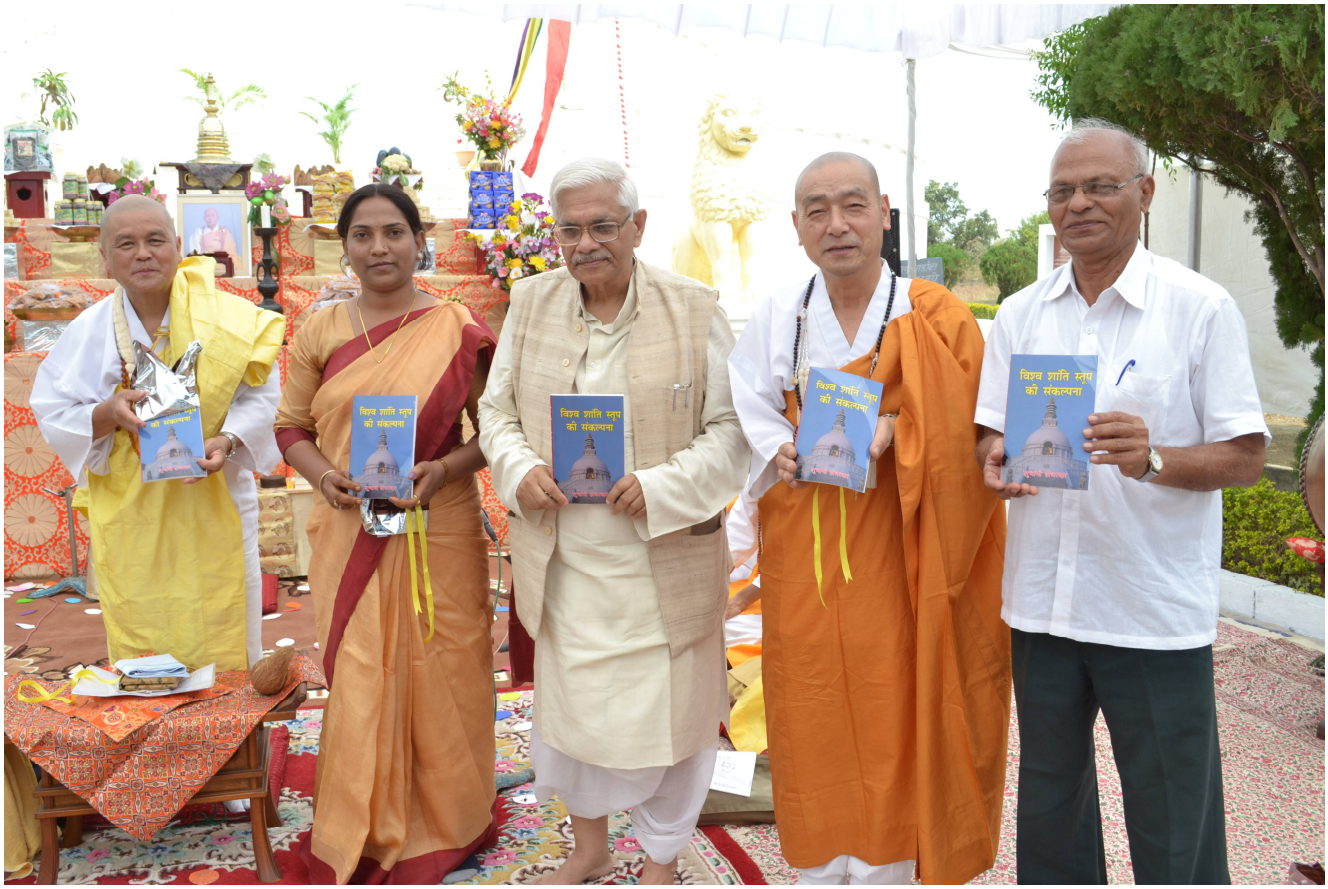

अदभूत शांति का अनुभव होता है। उन्होंने अपना वक्तव्य पहले हिंदी में तथा बाद में अंग्रेजी में दिया। इस अवसर पर फुजीई गुरूजी मेमोरियल ट्रस्ट, गोपुरी, वर्धा के संरक्षक असाई गुरूजी, जापान

के भिक्षु निपोनझान म्योहोजी, श्रीमती माधुरी मिश्र, गांधी विचार परिषद के निदेशक भरत महोदय,

नेपाल के भिक्षु उदय भद्र, विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. सुरजीत कुमार सिंह, जनसंपर्क

अधिकारी बी. एस. मिरगे, शुभांगी शंभरकर सहित जापान, अमेरिका, नेपाल तथा भारत के विभिन्न स्थानों से आए भिक्षुओं और वर्धा के गणमान्य नागरिकों की बड़ी संख्या में उपस्थिति थी। कार्यक्रम का संचालन अशोक मेहरे ने किया।

कार्यक्रम में शुभांगी शंभरकर लिखित 'विश्व शांति स्तुप की संकल्पना' पुस्तक का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत असाई गुरूजी ने किया। भुवनेश्वर से आए योधा गुरूजी ने पूजाविधि सम्पन्न की तथा उपस्थितों को संबोधित भी किया। प्राध्यापक माणिकताई देसाई ने शांति पाठ किया। कार्यक्रम के दौरान संगायण पत्रिका का लोकार्पण भी किया गया।